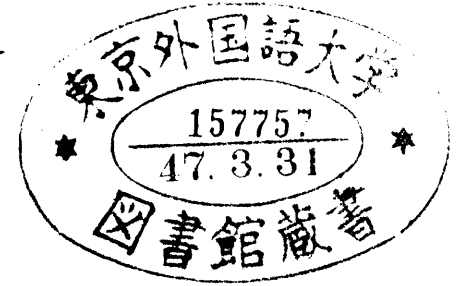


सचित्र कूर्माचल की लोक-कथाएँ

लेखक
जीवनचन्द्र पंत



१९५८

आत्माराम एण्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
काश्मीरी गेट
दिल्ली-६

昭和46年度科学研究費購入図書
寄贈 東外大・東洋文化研究会
合同海外学術調査団
氏

बिच्छू का पेड़



कथा-क्रम

कथा	पृष्ठ
१. बिच्छू का पेड़	१
२. अंधा और कुबड़ा	१३
३. चतुर लाटा	२२
४. नग-ठग	३५
५. लाल सूवरी	४४
६. राजा का सपना	५५

एक था राजा । उसके केवल एक लड़की थी और कोई न था । जब वह बूढ़ा होकर मरने को हुआ तो उसने अपने मंत्री को बुलाकर कहा—“मंत्री, मैं अब थोड़े ही दिन का मेहमान हूँ ।”

मंत्री हाथ जोड़ कर रोने लगा—“नहीं नहीं, महाराज ! ऐसा न कहिए ।”

“चुप रहो मंत्री, मेरी बात सुनो, मौत रोकी नहीं जा सकती, न किसी की खुशामद की बातों से वह टाली ही जा सकती है । मैं अवश्य मरने वाला हूँ । तुम ध्यान से मेरी बात सुनो । मेरे बाद मेरी वारिस यही मेरी एकमात्र लड़की है । मुझे इसके लड़की होने का भी कोई दुःख न था, यह बिल्कुल नादान है, यही अफसोस है ।”

मंत्री बोला—“महाराज ! आप जैसी आज्ञा देंगे वही किया जावेगा ।

“क्या कहूँ मंत्री, उसकी